गुरु तेग बहादुर निबंध

परिचय

सिख धर्म के नौवें गुरु, **गुरु तेग बहादुर जी**, को इतिहास में साहस, निःस्वार्थ त्याग और धार्मिक स्वतंत्रता के सिद्धांतों में अटूट विश्वास के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है। उनका जीवन और शहादत मानव इतिहास के सबसे महान बलिदानों में से एक हैं। 1 अप्रैल, 1621 को अमृतसर में छठे सिख गुरु, **गुरु हरगोबिंद साहिब जी** और **माता नानकी जी** के घर जन्मे, उनका बचपन का नाम **त्याग मल** था। उनकी शुरुआती शिक्षा में न केवल आध्यात्मिक ज्ञान और **ध्यान (मेडिटेशन)** शामिल था, बल्कि उन्हें उनके पिता, जो स्वयं एक महान योद्धा थे, द्वारा **मार्शल आर्ट्स** और हथियार चलाने का प्रशिक्षण भी दिया गया था। छोटी उम्र से ही उन्होंने दयालुता, विनम्रता और बहादुरी जैसे गुणों को आत्मसात किया। **करतारपुर के युद्ध (1635)** में उनकी अद्वितीय वीरता के कारण ही उन्हें 'तेग बहादुर' (तलवार का धनी) नाम मिला, जिसने उनकी भावी आध्यात्मिक और नेतृत्व यात्रा की नींव रखी।

शिक्षा और यात्राएँ (मध्य भाग 1)

गुरु तेग बहादुर जी ने लगभग 20 वर्षों तक **बकाला** नामक स्थान पर गहन ध्यान और तपस्या की। 1664 में, उन्हें आठवें गुरु, **गुरु हरकिशन जी** के निधन के बाद औपचारिक रूप से गुरु गद्दी सौंपी गई। गुरु बनने के बाद, उन्होंने शांति, एकता और निराकार **अकाल पुरख (भगवान)** के प्रति भक्ति का संदेश फैलाने के लिए पूरे भारत में दूर-दूर तक यात्राएँ कीं। उन्होंने पंजाब के बाहर भी अनेक नए धर्म प्रचार केंद्र स्थापित किए। उन्होंने आंतरिक शक्ति, निःस्वार्थ सेवा (**सेवा**), और सांसारिक मोह-माया से वैराग्य के महत्व पर जोर दिया। उनकी **115 पवित्र रचनाएँ** सिख धर्म के पवित्र ग्रंथ **गुरु ग्रंथ साहिब** में दर्ज हैं, जिनमें **सलोकों** और **शब्दों** के माध्यम से लोगों को न्याय, सच्चाई और एक नैतिक जीवन जीने के लिए प्रेरित किया गया है। उन्होंने लोगों को यह सिखाया कि उन्हें डर से ऊपर उठना चाहिए और सच्चाई के लिए प्रतिबद्ध रहना चाहिए, भले ही उन्हें कितनी भी कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े। उनका प्रसिद्ध उपदेश है: **"भय काहू को देत नहि, नहि भय मानत आन" (न किसी को डराओ और न ही किसी से डरो)**।

सर्वोच्च बलिदान (मध्य भाग 2)

गुरु तेग बहादुर जी की जिंदगी का सबसे निर्णायक क्षण मुगल बादशाह **औरंगज़ेब** के शासनकाल में हुए धार्मिक उत्पीड़न के खिलाफ उनका कड़ा रुख था। जब **कश्मीरी पंडितों** को जबरन इस्लाम धर्म अपनाने के लिए मजबूर किया गया, तो उन्होंने दिल्ली जाकर गुरु तेग बहादुर जी से सहायता माँगी। गुरु जी ने बहादुरी के साथ उनके अपने धर्म को स्वतंत्र रूप से मानने के अधिकार की रक्षा करने का फैसला किया। यह सिर्फ एक बहादुर कार्य नहीं था, बल्कि यह एक मजबूत घोषणा थी कि हर इंसान को बिना किसी डर या ज़ुल्म के अपनी आस्था का पालन करने का अधिकार है, चाहे वह किसी भी धर्म का हो। इस मौलिक सिद्धांत की रक्षा के लिए, गुरु तेग बहादुर ने स्वेच्छा से स्वयं को मुगल अधिकारियों को सौंप दिया। भीषण यातनाएँ सहने के बावजूद, उन्होंने अपने मिशन से पीछे हटने या अपने विश्वासों से समझौता करने से साफ इनकार कर दिया। अंततः, **24 नवंबर, 1675** को, उन्हें दिल्ली के **चांदनी चौक** में सार्वजनिक रूप से शहीद कर दिया गया। उनकी अतुलनीय शहादत ने उन्हें **"हिंद की चादर" (भारत की ढाल)** की उपाधि दिलाई, क्योंकि उन्होंने न केवल सिखों के लिए, बल्कि भारत के हर नागरिक के धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए अपना जीवन न्योछावर कर दिया।

विरासत और निष्कर्ष

गुरु तेग बहादुर जी की विरासत उनके बेटे, **गुरु गोबिंद सिंह जी** के माध्यम से फली-फूली, जिन्होंने सिख समुदाय को एक सशक्त और जुझारू रूप दिया। आज, दिल्ली में **गुरुद्वारा शीश गंज साहिब**, वह स्थान जहाँ उनका शीश काटा गया था, और **गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब**, जहाँ उनके पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार किया गया था, उनके बलिदान के जीवंत स्मारक हैं। उनकी शिक्षाएँ आज भी दुनिया भर में लाखों लोगों को प्रेरित करती हैं, उन्हें अन्याय का विरोध करने, कमजोरों की रक्षा करने और अपने नैतिक मूल्यों पर अडिग रहने की याद दिलाती हैं।

संक्षेप में, गुरु तेग बहादुर जी का जीवन मानवता के लिए एक शाश्वत मार्गदर्शक है। उनका बेमिसाल साहस, गहन आध्यात्मिकता और सर्वोच्च बलिदान उन्हें धार्मिक स्वतंत्रता और मानवाधिकारों का एक स्थायी प्रतीक बनाते हैं। उनका संदेश हमें सम्मान के साथ जीने, दूसरों की आस्थाओं का आदर करने और सत्य के लिए डटकर खड़े रहने के लिए प्रोत्साहित करता है। उनके आदर्शों का पालन करके ही हम सद्भाव, समानता और करुणा पर आधारित एक न्यायपूर्ण समाज का निर्माण कर सकते हैं।

Visit Website : https://www.PDFSeva.Net